19

यीशु की सेवकाई का अंतिम सप्ताह

1. बैतनिय्याह में अभिषेक (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:1-11; यूहन्ना 12:1-8)। -यीशु शुक्रवार रात को बैतनिय्याह में पहुंच गया था। फसह मनाने आए यात्रियों के लिए यीशु दिलचस्पी का केन्द्र बन गया था। वे तो नगर में या जैतून पहाड़ की ढलानों पर तम्बू में और किद्रोन की घाटी में ठहरने के लिए जा रहे थे, जबकि वह बैतनिय्याह के अपने प्रसिद्ध ठिकाने में जाना चाहता था। यहां उसका तीसरी बार स्वागत होना था। सब्त आराम से बीत जाना था परन्तु उस रात शमौन कोढ़ी के घर उसके सम्मान में एक भोज का आयोजन किया गया था। लाज़र के जी उठने के लिए आनन्द मनाने, मरियम, मारथा और लाज़र एक दूसरे से फिर से मिलने और उसके वहां होने के लिए जिसके वे बहुत आभारी थे, वहीं थे। परन्तु वहां एक ऐसा शख्स भी था जिसकी कृतज्ञता को सख्य या सामान्य ढंग नहीं कहा जा सकता था। प्रभु के चेहरे पर टकटकी लगाए हुए, उसकी अनुग्रहकारी बातों को सुनते हुए जब वह धैर्य न रख सकी, तो उठकर उसने बहुत महंगे इत्र का एक बर्तन लिया, जब वह भोजन करने बैठा था तो उसने पहले उसके सिर पर उंडेला, फिर उसके पांवों पर लगा दिया। आज की तरह उस समय भी छोटी सोच वाले लोग थे जिन्होंने "व्यर्थ" बात के लिए उसकी आलोचना की, परन्तु यीशु की नज़र में जिस प्रेम से वह काम किया गया था, बहुत महत्व रखता था। "उसे छोड़ दो; ... जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहले से मेरी देह पर इत्र मला है।"[1]

2. रविवार: विजयी प्रवेश (मत्ती 21:1-17)। -फसह के सप्ताह में यरूशलेम पलिश्तीन और रोमी साम्राज्य के सभी भागों से आए परदेशियों से भरा रहता था, यीशु को सुनने वालों में से अधिकांश ने उसके विषय में सुना था। पिरिया की सेवकाई और लाज़र को जिलाने का असर जहां एक तरफ प्रसिद्धि को फिर से बढ़ाना था वहीं दूसरी तरफ घृणा की आग में घी डालना भी था। अंत निकट है इसलिए यीशु किसी अवश्यंभावी विरोध को टालता नहीं बल्कि मसीहा होने का प्रदर्शन सार्वजनिक रूप में करता है। परन्तु वह युद्ध के प्रतीक घोड़ों को चुनने के बजाय, शांति के प्रतीक गधे के बच्चे को चुनता है। जैतून की पहाड़ी पर उसके पहुंचने पर, नगर की भीड़ बैतनिय्याह से उसके साथ आने वाली भीड़ के साथ मिलकर होशन्ना और जयघोषों के बीच उसका यरूशलेम में प्रवेश होता है। पूरे शहर

में परस्पर विरोधी विचारों से हलचल मच गई। यह पूरी तरह से एक शाही प्रदर्शन था; यरूशलेम, जिस पर वह रोया था, ने उदासीनता दिखाई या खुलकर आलोचना की, कोई यह पूछे बिना नहीं रह सकता कि ज़्या उसने भी अपने प्रभु को ग्रहण कर लिया था? हम इसका उज़र नहीं दे सकते। हम केवल यही जानते हैं कि उसका ठुकराया जाना निश्चित था। नि:संदेह उत्साह से भरे चेले निराश थे; यीशु ने उनकी आशा के अनुरूप मसीहा होने का प्रदर्शन नहीं किया था ज़्योंकि वह तो केवल मन्दिर की हर चीज की समीक्षा करने के बाद रात काटने के लिए बैतनिय्याह में चला गया था।

3. सोमवार: अंजीर का फल रहित पेड़; दूसरी बार मन्दिर को शुद्ध करना (मज़ी 21:12, 13, 18, 19; मरकुस 11:12-18)। -सुबह के समय नगर को जाते हुए यीशु ने ऐसा आश्चर्यकर्म किया जो आश्चर्यकर्म भी था और दृष्टांत भी। बेमौसमी पज़ों से भरा फलरहित अंजीर का पेड़ अपने फल न होने पर इतरा रहा था। यीशु के एक शज़्द से वह सूख गया जो उस झूठे नगर और कौम या दिखावटी जीवन का प्रतीक है जिसका अंत विनाश है। फिर यीशु मन्दिर में गया। रविवार की समीक्षा की शृंखला को आगे बढ़ाते हुए उसने अपने पहले फसह की तरह फिर मन्दिर को शुद्ध किया। यूहन्ना ने यूनान देश के आशीषित कुछ प्रतिनिधियों की जिन्हें फिलिप्पुस और अंद्रियास यीशु के पास लाए थे एक दिलचस्प घटना को संजोकर रखा है (12:20-33)। उसने समय से पूर्व देखा जब उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से, सब लोगों ने उसकी ओर आना था। उसका मन बलिदान देने से हिचकिचा रहा था; परन्तु "जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है।"[2] इस कारण यीशु ने अंत तक अपने राज्य की प्रकृति ठहराने के लिए हर अवसर का इस्तेमाल किया। यदि वह चाहता तो एक दिन में ही राजनैतिक क्रांति से सांसारिक राज्य की स्थापना कर सकता था; परन्तु यह प्रश्न तो बहुत पहले ही हल हो गया था। मनुष्य का और उसका मुकुट क्रूस के द्वारा ही मिलना था।

4. मंगलवार: प्रश्नों का दिन (मज़ी 21:23-25:46)। -अब हम यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण दिन में आते हैं। इस दिन का आरज़्भ लोगों में उसका अपमान करने के लिए तैयार किए गए मन्दिर में (1) उसके अधिकार को स्पष्ट करती हुई महासभा की एक कमेटी द्वारा; (2) व्यवस्था के प्रति श्रद्धा के बारे में फरीसियों द्वारा; (3) पुनरुत्थान के विषय में सदूकियों द्वारा; (4) फिर से, सबसे बड़ी आज्ञा के विषय में, फरीसियों द्वारा; (5) मसीह के विषय में स्वयं यीशु द्वारा पूछे गए प्रश्नों से होता है। यीशु ने दृष्टांतों के तीन बड़े समूहों अर्थात दो पुत्रों के दृष्टांत, दुष्ट किसानों और राजा के पुत्र के विवाह के दृष्टांत देकर हैरान करने वाले उज़र दिए। फिर अपने शत्रुओं पर पलटवार करते हुए उसने उन पर "जीवन भर की सारी आलोचना का जवाब दे दिया।" उसके सात वज्र "हे *कपटी* शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय"[3] उनके सिरों पर जलते कोयले रखने की तरह थे। वे इसी के योग्य थे; परन्तु यीशु को यह पता होना चाहिए था कि यह खतरनाक था। इसके बाद वह उनसे दया की उज़्मीद नहीं कर सकता था। मन्दिर को सदा के लिए छोड़ते हुए यीशु की अंतिम घटना में दो दमड़ियां देने वाली विधवा की प्रशंसा की गई थी। यह

सुन्दर घटना बर्फ की चट्टान से फूल उगने के समान थी।

चेलों के साथ बाहर जाते हुए, वह मन्दिर की ओर मुंह कर जैतून की घाटी पर बैठ गया। वहां उसने, चेलों के मन्दिर के बड़े-बड़े पत्थरों की बात, और उसके दूसरी बार आने के प्रश्न का जवाब देते हुए यरूशलेम के विनाश और अपने द्वितीय आगमन पर प्रवचन दिया। इस सब में यही शिक्षा थी कि ''जागते रहो; तैयार रहो; अवसर को बहुमूल्य जानो।'' इन बातों पर उसने दस कुंवारियों और तोड़ों के दृष्टांत देकर जोर दिया। इसके बाद मत्ती 25 अध्याय में दर्ज न्याय के दृश्य की वास्तविक तस्वीर मिलती है।

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का अंतिम और सबसे महान दिन, घटना और शिक्षा के साथ समाप्त हुआ। चेलों के साथ कुछ देर चलने के बाद यीशु ने बैतनिय्याह के शांत इलाके में एक बार फिर विश्राम किया।

परन्तु उसके शत्रुओं का दिन इस तरह नहीं ढला, एक गुप्त सभा करके उन्होंने पहले तो यह निर्णय लिया कि, उसे मार डाला जाए और फिर यह कि यह हत्या पर्व के दौरान न हो; ज़्योंकि वे कपटी होने के साथ-साथ डरपोक भी थे, जिस कारण उन्होंने उसके पीछे आने वाली भीड़ के होते उस पर हाथ डालने का साहस नहीं किया।

और अब हमें इतिहास की एक पहेली मिलती है। ऐन मौके पर, यीशु के बारह चेलों में से एक, यहूदा आ जाता है, जिसे पता था कि वह किस समय कहां जाता और कहां रहता है। वह धन के लिए अपने प्रभु को पकड़वाने की पेशकश करता है। सुसमाचार की पुस्तकों में दिए गए विवरण साफ तौर पर उसके उद्देश्य का कारण लालच बताते हैं (मत्ती 26:14, 15; मरकुस 14:10, 11; लूका 22:3-5; *तु.* यूहन्ना 12:4-6)। प्रेम की एक भेंट देने वाली एक स्त्री पर कुड़कुड़ाने वाले ने चांदी के तीस सिक्कों के लिए जो मरियम के कृतज्ञतापूर्ण बलिदान के एक तिहाई मूल्य का था, अपने प्रभु को बेच दिया।

5. बुधवार: तूफ़ान से पहले की शांति। -बुधवार की घटनाओं का कोई विवरण नहीं मिलता है। इस दिन घटित होने वाले दृश्यों की हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं- पूरा शहर देख रहा है, हैरान है कि वह मन्दिर में वापस ज़्यों नहीं लौटा; लोग उसकी बातें सुनना चाहते हैं जबकि अधिकारी उसके खून के प्यासे हैं। परन्तु उसका काम तो हो चुका था। उसने बैतनिय्याह में अकेले में अपने चेलों से बात की होगी; अधिक सम्भावना है कि उसने अंतिम दृश्यों की प्रार्थनापूर्वक तैयारी के लिए, चैन से अपना दिन बिताया होगा। हम नहीं जानते। रहस्य का पर्दा उस दिन पर पड़ा रहता है। ''उस रात वह पृथ्वी पर अंतिम बार लेटा। गुरुवार सुबह वह दोबारा कभी न सोने के लिए उठा।''

6. गुरुवार: अंतिम भोज (मत्ती 26:17-35; यूहन्ना 13:1-17)। -गुरुवार को किसी समय यीशु ने अपने दो चेलों को नगर में पस्कल (paschal) का भोज तैयार करने के लिए भेजा। उस रात वह दूसरी बार बारह चेलों के साथ खाने को बैठा; ज़्योंकि यहूदा अभी उनके साथ ही था जो ऊपर से तो चेला था, परन्तु मन से वह एक धोखेबाज़ और जासूस था। बैठने के लिए जगह के लिए झगड़ते समय उस छोटे समूह पर एक बादल छा गया। यीशु ने उन्हें उनकी महत्वाकांक्षा के लिए इतनी सुन्दरता से डांटा जिसकी नकल करना कठिन है।

एक साधारण नौकर की तरह खाने के मेज से उठकर उसने उनके पांव धोए; फिर उसने शर्मिन्दा हुए चेलों को दीनता और सेवा का सबक समझाया। यीशु द्वारा आगे यह कहने से कि ''तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा''[4] वह बादल और घना हो गया। यहूदा शीघ्र ही उनमें से चला गया- चेलों को लगा कि वह उनके किसी काम से गया है, जबकि यीशु को मालूम था कि वह अपना काम करने गया है। फिर यीशु ने सब चेलों द्वारा उसे छोड़ जाने और आत्मविश्वास से भरे पतरस द्वारा उसका इन्कार करने की बात प्रकट की। फिर बादल छंट जाता है और यीशु उस सुन्दर यादगारी भोज की स्थापना करता है और यूहन्ना 14-16 में लिखित अनुपम उपदेश देता है। वह प्रभु की वास्तविक प्रार्थना के साथ अपनी बात समाप्त करता है (यूहन्ना 17); इस प्रार्थना का दायरा इतना विशाल है कि इसमें उस समय के चेले, वे सब लोग जिन्होंने उनके वचन के द्वारा उस पर विश्वास करना था और सारा संसार आता है। इस प्रकार, संवेदनशील प्रवचन और संसार को शामिल करने वाली प्रार्थना में आधी रात हो गई। चांदनी रात में कमरे से बाहर जाते हुए, यीशु शहर छोड़कर बैतनिय्याह की ओर अपने चेलों के साथ चला गया।

7. गतसमनी (मत्ती 26:36-46)। -किद्रोन नामक नाले के पूर्वी किनारे पर जैतून के पहाड़ के नीचे, गतसमनी (कोल्हू) नामक एक प्रसिद्ध बाग या वाटिका है। यह यीशु का पसन्दीदा विश्रामस्थल था। जैतून के पेड़ों की छाया में आते हुए, उसने चुने हुए तीन को छोड़ बाकी सभी चेलों को वहां रहने दिया और प्रार्थना के लिए बाग में आगे चला गया। उन तीनों को वहां पास ही छोड़कर वह पेड़ों की छाया में और आगे चला गया और बड़ा दुखी होकर मुंह के बल झुक गया। वह ''बहुत ही अधीर''[5]; ''व्याकुल''[6]; ''बहुत उदास'' था, ''जैसे मरने वाला हो''[7]; ''उसका पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी बूंदों की नाईं भूमि पर गिर रहा था।''[8] तीन बार उसके मुंह से धीमी सी पुकार निकली, ''हे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।''[9] तीन बार वह उन तीनों के पास जाकर उन्हें सोए हुए देखता है। इस सब का ज़्या अर्थ है ? ज़्या शारीरिक मृत्यु के भय से उसके चेहरे से पसीना लहू बनकर और उसके होंठों से कराहने की आवाज़ आ रही थी ? फिर तो उसमें किसी साहसी योद्धा से बहुत कम वीरता, फांसी के तज़्ते पर क्रूर अपराधी से कम शारीरिक साहस था। ज़्या उसके महिमामय पौरुष की जिसे हम मानते हैं, अंत में इतनी दयनीय स्थिति हो गई थी ? ज़्या इसका अर्थ बहुत महत्वपूर्ण नहीं है ? ज़्या संसार के पापों और दुखों का बोझ पृथ्वी पर उसे कुचल नहीं रहा था। यह दृश्य इतना संवेदनशील और पवित्र है कि बिना सोचे समझे अनुमान लगाना ठीक नहीं है। हम केवल इतना ही जानते हैं कि इसमें से, अपने उद्देश्य के होने वाले पिछले सभी प्रहारों की तरह वह विजयी होकर आया: ''भज़्ति के कारण उसकी सुनी गई'' (इब्रा. 5:7); ''स्वर्ग से एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ देता था'' (लूका 22:43)।

पाद टिप्पणियां

[1]मरकुस 14:6-8. इस अभिषेक को लूका 7 अध्याय वाले अभिषेक से न मिलाया जाए। वह पहले हुआ था; यह, यीशु की सेवकाई में बाद में हुआ; वह, शमौन फरीसी के घर था; यह शमौन कोढ़ी के घर; वह उद्धार पाई हुई एक स्त्री द्वारा किया गया था; यह आत्मिक मन वाली मरियम द्वारा; उसमें, शमौन ने स्त्री के चरित्र के कारण दोष निकाला था; इसमें यहूदा फ़िजूलखर्ची के कारण दोष लगाता है। [2]यूहन्ना 12:24. [3]मत्ती 23:13, 14, 15, 23, 25, 27, 29. [4]मत्ती 26:21; मरकुस 14:18; लूका 22:21; यूहन्ना 13:21. [5]मत्ती 14:33; मत्ती 26:37 भी देखिए। [6]मरकुस 14:33; मत्ती 26:37 भी देखिए। [7]मत्ती 26:38; मरकुस 14:34. [8]लूका 22:44. [9]मत्ती 26:39, 42, 44; मरकुस 14:36, 39, 41; लूका 22:42-46 भी देखिए।